International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-03-2019; Accepted: 30-04-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 225-228

रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० कल्पना मिश्रा
पी–एच०डी०, शिक्षा विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। "शिक्षा सबके लिये सब शिक्षा के लिये" विचार के आधार पर प्रत्येक बालक के लिए शिक्षा आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के साथ ही विद्यालयों में न्यूनतम अधिगम स्तर को निर्धारित करने एवं उन्हें प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है। दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अर्थ अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं को दी जाने वाली ऐसी शिक्षा है, जिससे उनमें विषय से सम्बन्धित समग्र ज्ञान हो जाय। शोध क्षेत्र में प्रशिक्षणोपरान्त शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है। प्रशिक्षण के बाद व्यावसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि हुयी है। दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : रीवा जिला, माध्यमिक स्तर, दक्षता, अधिगम स्तर।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन तथा परिमार्जन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह बोलना, चलना, हँसना, खेलना इत्यादि क्रियाएँ अपने माता–पिता द्वारा या परिवार में सीखता है। वह बालक परिवार से विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहाँ से नवीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढ़ता लिखता है, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है और सीखने की प्रक्रिया द्वारा अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सोद्देश्य प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है।

कोरे के अनुसार – "क्रियात्मक अनुसंधान व प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहारिक कार्यकर्ता वैज्ञानिक ढंग से अपनी समस्याओं का अध्ययन अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन, सुधार और मूल्यांकन करते है।"

दक्षता आधारित मूल्यांकन का अर्थ है विद्यार्थियों की दक्षता पर आधारित न्यूनतम अधिगम आंकलन विश्लेषण करना जिससे विद्यार्थियों की दक्षता का सुनिश्चत किया जा सके। दक्षता आधारित मूल्यांकन के द्वारा अध्यापक उन कारणों को भी ज्ञात कर लेता है जिनके कारण विद्यार्थी अपेक्षित स्तर तक सीखने में असमर्थ रहते है अर्थात शिक्षकों को कक्षा में समय–समय पर दक्षता आधारित मूल्यांकन करते रहना चाहिए जिससे छात्रों में दक्षता का ज्ञान हो सके और अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाया जा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन अध्ययन किया गया है। माध्यमिक शाला में पहुंचने के साथ ही छात्र–छात्राओं को अधिगम आधारित शिक्षा का प्रारंभ कराया जाता है, जिसका आधार व्यावहारिक ज्ञान और मस्तिष्क को चिंतन के लिए विकसित करना है। इस तरह व्यक्तित्व के विकास की प्रभावी भूमिका की शुरूआत माध्यमिक शाला से होती है। वर्तमान में शाला स्तर पर प्रोत्साहन योजनाओं के कार्य निष्पादन पर शिक्षकगणों के दृष्टिकोण को समझने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया गया ताकि प्रोत्साहन योजनाओं से वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें।

3. उद्देश्य
शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–
1. शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि का पता लगाना।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. परिकल्पना
शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–
1. मध्यमिक स्तर के शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्योंथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज है। अतः रीवा जिला अन्तर्गत

स्थित माध्यमिक स्तर पर किये जाने वाले दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित कार्य इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये है।

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित 90 विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 180 शिक्षक प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक तथा 2–2 अभिभावक कुल 180 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

6. अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है–

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिषत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।
- **प्रश्नावली निर्माण :** प्रश्नावली का सामाजिक अनुसंधान में विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले हुए सूचनादाताओं से आंकड़े संकलन करने में महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंकड़े संकलन करने की एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें कम समय में अनेक सूचनादाताओं जो कि विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए होते हैं, से सूचना एकत्रित की जा सकती है। प्रश्नावली प्रश्नों की सूची होती है जिनका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्हीं परिस्थितियों में किया जा सकता है जिसमें सूचनादाता शिक्षित हो।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कौल, लोकेश (1998)[1] शर्मा, आर.ए. (1998)[2], मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005)[3], पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[4], गुप्ता, एस.पी. (1997)[5], सिंह अरूण कुमार (2001)[6] एवं त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन (2007)[7] शुक्ला रमा शंकर (1989)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश का रीवा जिला 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 6314 वर्ग किलोमीटर है। रीवा जिला समुद्र से 380 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रीवा जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व में उत्तरप्रदेश का मिर्जापुर जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 "शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है।"

सारणी 1: षिक्षकों की प्रषिक्षणोपरान्त व्यवसायिक दक्षता एवं शैक्षिक ज्ञान में वृद्धि का अध्ययन

क्र.	प्राप्त जानकारी के स्त्रोत	कुल संख्या	शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि सम्बन्धी अभिमत						व्यवसायिक दक्षता के वृद्धि सम्बन्धी अभिमत					
			पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत		पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत	
			सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	130	72.22	35	19.44	15	8.33	134	74.44	43	23.89	3	1.67
2.	प्रधानाध्यापक	90	71	78.89	14	15.56	5	5.56	70	77.78	15	16.67	5	5.56
3.	प्रशिक्षक	9	9	100.00	–	–	–	–	9	100.00	–	–	–	–
4.	अभिभावक	180	136	75.56	37	20.56	07	3.89	138	76.67	36	20.00	6	3.33
5.	छात्र	900	308	34.22	458	50.89	134	14.89	305	33.89	458	50.89	137	15.22

सारणी क्रमांक 1 के व्याख्या एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि स्पष्ट होता है कि 72.22 प्रतिशत शिक्षक अपने शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि से पूर्ण रूप से सहमत है। 19.44 प्रतिशत शिक्षक आंशिक रूप से सहमत है तथा 74.44 प्रतिशत शिक्षक व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि से पूर्ण सहमत है। 23.89 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। 1.67 प्रतिशत शिक्षक असहमत है। 78.89 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अपने शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के प्रति पूर्ण सहमत है तथा 15.56 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत और 5.56 प्रतिशत असहमत है। 77.78 प्रतिशत शत व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि सम्बन्धी पूर्ण सहमत है तथा 16.67 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। लेकिन 5.56 प्रतिशत प्राचार्य अहसमत है। साथ ही 100 प्रतिशत प्रशिक्षक अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक दक्षता में

प्रशिक्षण बाद वृद्धि के प्राप्त पूर्ण सहमत है। साथ ही 75.56 प्रतिशत अभिभावक, शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के पूर्ण सहमत है तथा 20.56 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। 3.89 प्रतिशत अभिभावक शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के वृद्धि से असहमत है। अब 76.67 प्रतिशत अभिभावक अपने शिक्षकों के व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि पूर्ण सहमत है। 20.00 प्रतिशत आंशिक असहमत तथा 3.33 प्रतिशत अभिभावक असमत है। 34.22 प्रतिशत छात्र, शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान एवं 33.89 प्रतिशत व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि से पूर्ण सहमत है, तथा 50.89 प्रतिशत छात्र आंशिक रूप से सहमत है लेकिन 14.89 प्रतिशत छात्र शैक्षणिक ज्ञान से असहमत और 15.22 प्रतिशत व्यावसायिक दक्षता से असहमत है।

सारणी 2: रीवा जिले में प्रशिक्षणोपरान्त शिक्षकों की शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि का अध्ययन (प्रारंभिक स्तर के गणित विषय के शिक्षकों का प्रशिक्षण पूर्व एवं पश्चात् में ग्रेड विभाजन)

क्र.	ग्रेड	प्रशिक्षण के शुरुआत में लिया गया टेस्ट कुल संख्या 180		प्रशिक्षण के बाद (अंत) में लिया गया टेस्ट कुल संख्या 180		प्रशिक्षण के बाद व्यवसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि / कमी
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	ए	35	19.44	84	46.67	+27.23
2.	बी	59	32.78	70	38.89	+6.11
3.	सी	58	32.22	22	12.22	−20.00
4.	डी	28	15.56	4	2.22	−13.14

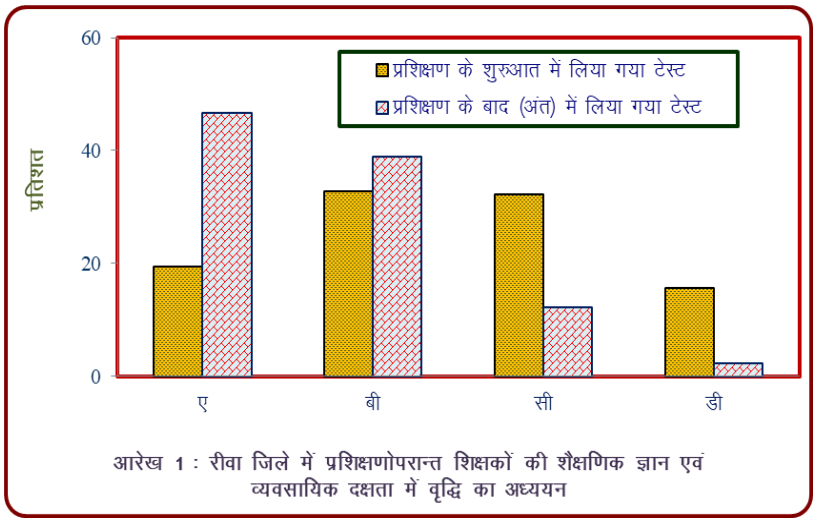

आरेख 1 : रीवा जिले में प्रशिक्षणोपरान्त शिक्षकों की शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि का अध्ययन

सारणी 2 एवं आरेख क्र.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण के शुरुआत में लिये गये प्री टेस्ट तथा अन्तिम में लिये गये परीक्षण से स्पष्ट है कि पहले की सापेक्ष अन्तिम परीक्षण टेस्ट में ए ग्रेड प्राप्त करने वाले शिक्षकों की संख्या में 27.23 प्रतिशत तथा बी ग्रेड प्राप्त करने वाले शिक्षकों की संख्या 6.11 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है, लेकिन ग्रेड सी प्राप्त कने वाले शिक्षकों की संख्या में 20.00 प्रतिशत की कमी दर्ज हुयी तथा डी ग्रेड पाने वाले शिक्षकों की संख्या में 13.14 प्रतिशत की कमी आयी है। अतः प्रशिक्षण के बाद व्यावसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि हुयी है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना – 2: दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी – 3 : दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर का सांख्यिकीय विश्लेषण

सारणी 3

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		450	450
मध्यमान (M)		32.33	32.60
मानक विचलन (SD)		8.22	8.08
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		−0.49	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (450-1) + (450-1) = 449+449=798$

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 मे न्यादर्श में चयनित दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 32.33 है तथा मानक विचलन 8.22 है और छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 32.60 है तथा मानक विचलन 8.08 है।

798 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.49 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

वास्तव में अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रशिक्षणोपरान्त शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है। प्रशिक्षण के बाद व्यावसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि हुयी है। दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्र–छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

13. सन्दर्भ ग्रंथ

1. कौल, लोकेश (1998)– शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिय हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली।
2. शर्मा, आर.ए. (1998)– ने शिक्षा अनुसंधान, और लाल बुक डियो, मेरठ।
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
5. गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
6. सिंह अरूण कुमार : *''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ''* चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001.
7. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007.
8. शुक्ला, रमा शंकर : शिक्षक शिक्षा – दशा एवं दिशा, जयपुर, 1989.